शिवशक्ति सरस्वती माँ

14. मातेश्वरी जी से सब सन्तुष्ट थे और मातेश्वरी जी भी सभी से सन्तुष्ट थीं। मातेश्वरी जी किसी के भाव-स्वभाव के प्रभाव में नहीं आती थीं। सबको प्रेम से जीतती थीं इसीलिए कोई उनको पराया नहीं समझता था। ईश्वरीय ज्ञान की नयी बातों को न मानने वाले भी मातेश्वरी जी के व्यक्तित्व की महिमा करते थे। उन्हें सभी अपनी माँ समझते थे।

15. सत्य तो यह है कि मम्मा ने ब्रह्मा बाबा के तन में अवतरित परमात्मा शिव के अति गुह्य व गोपनीय राज़ को अत्यन्त गहराई से परख कर, शीघ्र ही अपनी कुशाग्र एवं पवित्र बुद्धि का परिचय दे दिया था। यज्ञ के इतिहास से यह स्पष्ट है कि बापदादा की प्रेरणाओं व आज्ञाओं को यथार्थ रीति समझकर उन्हें यज्ञ में कार्यान्वित कराने का उत्तरदायित्व उन्होंने पूर्ण कुशलता से निभाया। वह अन्य यज्ञवत्सों को बार-बार समझाती थीं कि यह आज्ञा किस की है! स्वयं जानी-जाननहार आलमाइटी आथार्टी की है। अत: ड्रामा में यह कार्य पहले से ही पूरा हुआ पड़ा है, हमें केवल निमित्त होकर हाथ-पैर चलाने हैं।

16. मातेश्वरी जी हरेक को कहती थीं कि किसी को मम्मा से किसी बात पर व्यक्तिगत रूप से मिलना हो तो किसी भी समय, बिना पूछे आ सकता है, किसी भी तरह की औपचारिकता की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार, माँ अपना सारा समय बच्चों की उन्नति और सेवा के लिए दिया करती थीं। वे जितनी बड़ी अथॉरिटी थीं उतना ही निर्मान भी थीं।

17. मम्मा की चाल को देखकर बाबा कहते थे कि देखो, धरती भी मम्मा को प्यार करती है। फ़रिश्तों की तरह मम्मा हमेशा हल्की रहती थीं। मम्मा कितनी भी सेवा करती थीं लेकिन कभी भी उनके चेहरे पर थकावट नहीं नज़र आती थी। सदा मुस्कराती और हल्की नज़र आती थीं। बाबा सदा कहते थे कि मम्मा इतनी पक्की पिड्डी है कि एक शिव बाबा को ही दिलवर बनाया है, और किस को भी दिल की बात नहीं सुनाती। जब भी मम्मा किसी जगह से विदाई लेती थीं तो सबकी आँखें नम हो जाती थीं पर, मम्मा इतनी पक्की थीं कि कभी भी उनकी आँखों में आँसू नहीं आते थे। मम्मा कहती थीं, बहाओ आँसू, कोई बात नहीं, लेकिन प्रेम के आँसू हों। अगर प्रेम के आँसू हैं, तो मोती बन जायेंगे।